



NEERAJ®

समष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत-II
(Principles of Microeconomics-II)

B.E.C.C.-134

B.A. General - 4th Semester

**Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers**

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

IGNOU.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Harmeet Kaur



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com

Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

समष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत-II (Principles of Microeconomics-II)

Question Paper—June-2023 (Solved).....	1-2
Question Paper—December-2022 (Solved)	1-2
Question Paper—Exam Held in July-2022 (Solved).....	1-3

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
--------------	-----------------------------------	-------------

IS-LM विश्लेषण (IS-LM Analysis)

1. वास्तविक क्षेत्र में संतुलन.....	1
(Equilibrium in the Real Sector)	
2. मौद्रिक क्षेत्र में संतुलन	14
(Equilibrium in the Monetary Sector)	
3. नवपारंपरिक संश्लेषण	26
(Neoclassical Synthesis)	

सकल घरेलू उत्पाद और अल्पावधि एवं दीर्घावधि में कीमत स्तर (GDP and Price Level in Short-Run and Long-Run)

4. समग्र मांग	36
(Aggregate Demand)	
5. समग्र आपूर्ति	49
(Aggregate Supply)	
6. संतुलन उत्पादन और कीमतें.....	63
(Equilibrium Output and Prices)	

**मुद्रास्फीति एवं बेरोजगारी
(Inflation and Unemployment)**

- | | |
|---------------------------------------------------|-----|
| 7. मुद्रास्फीति : संकल्पना, प्रकार एवं मापन | 80 |
| (Inflation: Concept, Types and Measurement) | |
| 8. मुद्रास्फीति के कारण और प्रभाव | 92 |
| (Causes and Effects of Inflation) | |
| 9. फिलिप्स वक्र | 105 |
| (Phillips Curve) | |

**भुगतान शेष तथा विनिमय दर
(Balance of Payments and Exchange Rate)**

- | | |
|---------------------------------|-----|
| 10. भुगतान शेष | 119 |
| (Balance of Payments) | |
| 11. विनिमय दर का निर्धारण..... | 135 |
| (Exchange Rate Determination) | |



**Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers**

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

समष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत-II
(Principles of Microeconomics-II)

B.E.C.C.-134

समय : 3 घण्टे]

[अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी भागों के प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार दीजिए।

भाग-क

नोट : इस भाग में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

प्रश्न 1. वर्णन कीजिए कि वास्तविक क्षेत्र और मौद्रिक क्षेत्र दोनों में एक साथ संतुलन कब होता है। समझाइए कि ऐसा संतुलन किस प्रकार स्थिर है।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-3, पृष्ठ-29, प्रश्न-3, पृष्ठ-30, प्रश्न-4

प्रश्न 2. समझाइए कि IS-LM मॉडल AD वक्र की व्युत्पत्ति कैसे की जाती है।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-36, 'समग्र मांग वक्र'

प्रश्न 3. मुद्रास्फीति से क्या अभिप्राय है? एक अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति के मुख्य कारण क्या हैं?

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-7, पृष्ठ-81, 'मुद्रास्फीति की परिभाषा', अध्याय-8, पृष्ठ-92, 'मुद्रास्फीति के कारण'

प्रश्न 4. (अ) विनिमय दर व्यवस्था के विभिन्न प्रकार क्या हैं?

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-11, पृष्ठ-139, प्रश्न-1

(ब) नाममात्र (अवास्तविक) विनिमय दर और वास्तविक विनिमय दर में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-11, पृष्ठ-135, 'नामिक विनिमय दर बनाम वास्तविक विनिमय दर'

भाग-ख

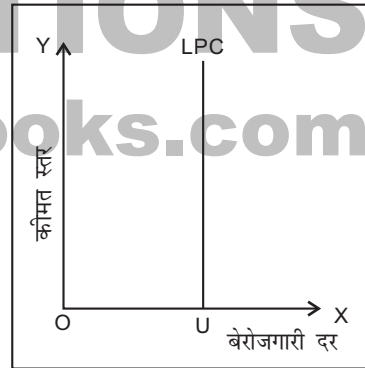
नोट : इस भाग में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए।

प्रश्न 5. समाज के विभिन्न हिस्सों पर मुद्रास्फीति के प्रभाव की चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-8, पृष्ठ-94, 'मुद्रास्फीति का प्रभाव'

प्रश्न 6. तर्कयुक्त प्रत्याशाओं के अन्तर्गत फिलिप्स वक्र के आकार की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-तर्कसंगत अपेक्षाओं के सिद्धांत के अनुसार, कुल आपूर्ति वक्र संभावित जीएनपी स्तर पर एक ऊर्ध्वाधर सीधी रेखा है (अर्थात्, बेरोजगारी की प्राकृतिक दर पर, संसाधनों और प्रौद्योगिकी को देखते हुए तर्कसंगत अपेक्षाओं के सिद्धांत के अनुसार, लंबे समय तक चलने वाला फिलिप्स वक्र, से मेल खाता है)। दीर्घकालीन कुल आपूर्ति वक्र बेरोजगारी की प्राकृतिक दर पर एक ऊर्ध्वाधर सीधी रेखा है जैसा कि नीचे दिखाया गया है-



तर्कसंगत अपेक्षा सिद्धांत दो बुनियादी तत्वों पर आधारित है। सबसे पहले, इसके अनुसार, श्रमिकों और उत्पादकों को काफी तर्कसंगत होने के कारण अर्थव्यवस्था की सही समझ होती है और इसलिए वे सभी उपलब्ध प्रासंगिक जानकारी का उपयोग करके सरकार की आर्थिक नीतियों के प्रभावों का सही अनुमान लगाते हैं। आर्थिक घटनाओं और सरकार की नीतियों के प्रभावों की इन आशंकाओं के आधार पर वे अपने हितों को बढ़ावा देने के लिए सही निर्णय लेते हैं। दूसरा यह है कि, शास्त्रीय अर्थशास्त्रियों की तरह, यह मानता है कि सभी उत्पाद और कारक बाजार अत्यधिक

प्रतिस्पर्धी हैं। परिणामस्वरूप, मजदूरी और उत्पाद की कीमतें अत्यधिक लचीली हैं और इसलिए तेजी से ऊपर और नीचे की ओर बदल सकती हैं। तर्कसंगत उम्मीदों का सिद्धांत मानता है कि नई जानकारी को बाजारों की मांग और आपूर्ति वक्रों में जल्दी से आत्मसात (ध्यान में लिया जाता है) किया जाता है, ताकि नई संतुलन कीमतें तुरंत नई आर्थिक घटनाओं और नीतियों के साथ समायोजित हो जाएं।

प्रश्न 7. भुगतान शेष का क्या अभिप्राय है? इसके घटक क्या हैं?

उत्तर—भुगतान शेष एक देश के नागरिकों का शेष विश्व से लेन-देन का विवरण है। यदि कोई भी लेन-देन किसी देश के निवासियों द्वारा भुगतान को जन्म दिया जाता है, तो यह उस देश के भुगतान शेष के घाटे को बढ़ाता है।

संदर्भ—देखें अध्याय-10, पृष्ठ-129, प्रश्न-1

प्रश्न 8. उन कारकों का वर्णन कीजिए जो मध्यम काल में AS वक्र को प्रभावित करते हैं।

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-5, पृष्ठ-51, 'मध्यावधि समग्र आपूर्ति वक्र में खिसकाव'

प्रश्न 9. LM वक्र के ढलान को प्रभावित करने वाले कारकों की चर्चा कीजिए। LM वक्र की व्याख्या कीजिए जब वह क्षैतिज आकार का हो।

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-2, पृष्ठ-18, प्रश्न-4, प्रश्न-5

प्रश्न 10. बेरोजगारी की प्राकृतिक दर की अवधारणा को समझाइए।

उत्तर—बेरोजगारी वह स्थिति है, जब कोई व्यक्ति जो मौजूदा मजदूरी दर पर कार्य करने के लिए इच्छुक होता है, परंतु उसे

नौकरी नहीं मिलती। इससे आर्थिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है, जो कि अर्थव्यवस्था की GDP को प्रभावित करता है। यह पारिवारिक आय में कमी कर मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। इससे अर्थव्यवस्था गिरावट में आती है। संसाधनों का कम उपयोग होता है। महंगाई और बेरोजगारी के प्रभाव आर्थिक की अपेक्षा सामाजिक रूप से और राजनीतिक रूप से अधिक होता है। इससे लोगों में असंतोष फैलता है।

इसे भी देखें—अध्याय-9, पृष्ठ-106, 'बेरोजगारी की स्वाभाविक दर' तथा पृष्ठ-109, प्रश्न-3, 'बेरोजगारी की स्वाभाविक दर'

प्रश्न 11. समग्र माँग वक्र का ढलान नीचे की ओर क्यों होता है? समझाइए।

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-4, पृष्ठ-40, प्रश्न-2

भाग-ग

प्रश्न 12. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त नोट लिखिए—

(अ) मुद्रास्फीति जनित मंदी

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-7, पृष्ठ-89, प्रश्न-9, 'मध्यम मुद्रास्फीति'

(ख) अर्थव्यवस्था पर पूर्ति धक्के का प्रभाव

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-5, पृष्ठ-49, 'किसी अर्थव्यवस्था की समग्र आपूर्ति'

(ग) उत्पादन अंतराल

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-6, पृष्ठ-64, 'उत्पादन अंतराल'

(घ) बलिदान अनुपात

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-8, पृष्ठ-95, प्रश्न-5, 'त्याग अनुपात'



Sample Preview of The Chapter

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

समष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत-II (Principles of Microeconomics-II)

वास्तविक क्षेत्र में संतुलन (Equilibrium in the Real Sector)

1

परिचय

अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं की कुल मांग और कुल आपूर्ति एक समान होने पर एक निश्चित बिंदु पर संतुलन स्तर निर्धारित होता है। पारंपरिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार अर्थव्यवस्था में मुद्रा में वृद्धि के परिणामस्वरूप कीमतों में आनुपातिक वृद्धि होती है, परंतु उत्पादन में वृद्धि नहीं हो पाती। केन्स का मानना है कि अर्थव्यवस्था में संसाधनों की बेरोजगारी होती है, मुद्रा की आपूर्ति में वृद्धि के कारण ब्याज में गिरावट आती है। ब्याज में गिरावट आने से निवेश में वृद्धि होती है और निवेश गुणक द्वारा उत्पादन में वृद्धि होती है। केन्स के अनुसार, वस्तु और मुद्रा बाजार से जुड़े हुए हैं, इसलिए दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। अर्थव्यवस्था में आर्थिक स्थिरता हेतु वस्तु बाजार और मुद्रा बाजार दोनों में असंतुलन होना अनिवार्य है। इस दिशा में कई अर्थशास्त्रियों द्वारा दोनों बाजारों में संतुलन बनाने का प्रयास किया गया है।

अध्याय का विहंगावलोकन

वस्तु बाजार

वह बाजार जहां कुल मांग और कुल आपूर्ति एक-दूसरे के साथ मिलकर आय और कीमत का संतुलन बिंदु निर्धारित करते हैं, बाजार कहलाता है। केन्सीय मॉडल में संतुलन बिंदु बचत और निवेश के समान होने पर प्राप्त होता है। साथ ही इस मॉडल में दोनों पर ब्याज दर के प्रभाव को महत्व नहीं दिया गया। वस्तु बाजार के संतुलन को आई-एस वक्र द्वारा व्यक्त किया जा सकता है; इसमें निवेश और बचत को समान माना गया है, जैसे—

$$AD = AS$$

उत्पादन के संतुलन बिंदु का सूत्र इस प्रकार है—

$$B = \frac{\bar{A}}{I + C + ct}$$

जहां संतुलन आय के दो निर्धारक हैं। इसमें उच्चतर सीमांत उपभोग प्रवृत्ति का अर्थ है, उच्च उत्पादन स्तर तथा निम्न सीमांत उपभोग प्रवृत्ति का अर्थ है, निम्न उत्पादन स्तर।

ब्याज दर और निवेश

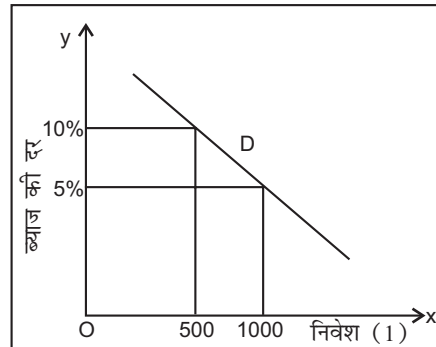
अर्थव्यवस्था में निवेश के निर्धारक बिंदु के रूप में ब्याज दर शामिल की जाती है। इससे ब्याज दर अधिक होने पर निवेश में कमी आती है। ब्याज दर बढ़ने से उधार की लागत में वृद्धि हो जाएगी यानी ब्याज दर अधिक होने पर कंपनी उधार कम लेगी और निवेश में कमी होगी और ब्याज दर में कमी आने पर कंपनी उधार ज्यादा लेगी और निवेश में बढ़ोत्तरी होगी। ब्याज दर और निवेश दोनों एक-दूसरे से विपरीत रूप से संबंधित हैं। निवेश व्यय फलन को इस प्रकार लिखा जा सकता है—

$$I = \bar{I} - bi \text{ जहाँ } b > 0, i = \text{ब्याज की दर}$$

$$b = \text{ब्याज दर हेतु निवेश की संवेदनशीलता या प्रतिक्रिया}$$

$$\bar{I} = \text{स्वायत्त निवेश व्यय}$$

समीकरण बताता है कि कम ब्याज दर का अर्थ उच्च निवेश है।

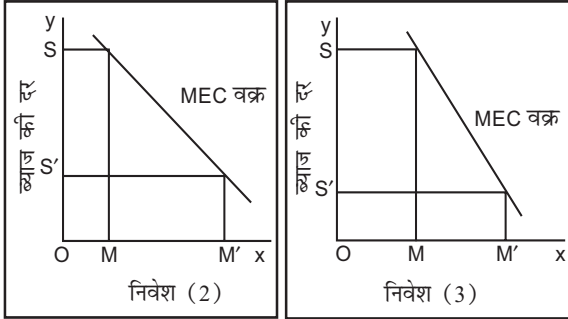


निवेश फलन

उपर्युक्त समीकरण में जब ब्याज की दर में कमी आती है यानी ब्याज दर 5% हो जाती है तो निवेश का स्तर उच्च हो जाता है।

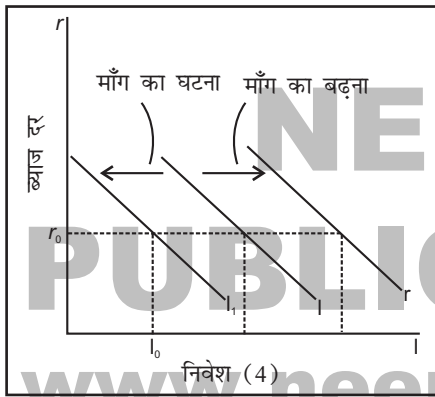
2 / NEERAJ : समष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत-II

समीकरण 2 और 3 के अनुसार निवेश ब्याज दर के प्रति अधिक संवेदनशील या कम संवेदनशील हो सकता है।



उच्च संवेदनशील निवेश निम्न संवेदनशील निवेश

इस प्रकार जब स्वायत्त निवेश बढ़ता है तो निवेश चक्र दाहिनी ओर होंगे, क्योंकि AD बढ़ता है, जबकि स्वायत्त निवेश के घटने पर यह चक्र बाईं ओर जाएगा, क्योंकि AD में गिरावट आती है, इसे हम समीकरण 4 में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।



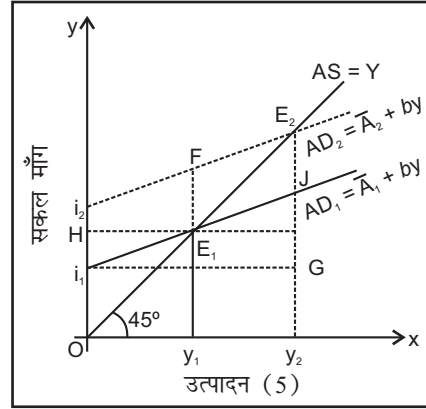
सकल माँग और ब्याज दर

ब्याज दर के कारण निवेश प्रभावित होता है और कुल माँग वक्र भी प्रभावित होता है।

$$\begin{aligned} \text{कुल माँग} &= AD \\ AD &= C + I + \bar{G} \\ AD &= \bar{C} + c\bar{TR} + c(I-t)y + \bar{I} - bi + \bar{G} \\ AD &= \bar{A} + \bar{C}y - bi \\ \text{इसमें } \bar{C} &= C(I-t) \\ \text{और } \bar{A} &= c\bar{TR} + \bar{I} + \bar{G} \end{aligned}$$

समीकरण 5 के अनुसार प्रारंभिक संतुलन उत्पादन y_1 है। यदि ब्याज दर i से i_2 तक कम होती है तो निवेश में वृद्धि होती है। कुल माँग वक्र AD_1 से AD_2 तक पहुँच जाता है, इसलिए नया संतुलन बिंदु E_2 पर आ जाता है और उत्पादन का संतुलन बिंदु y_2 हो जाता है।

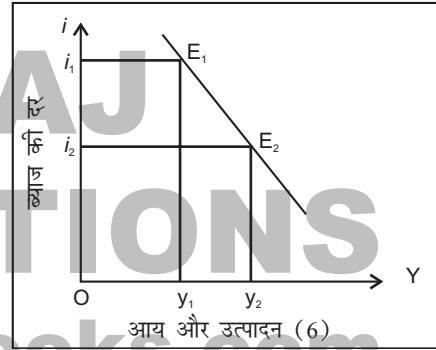
जैसे—



ब्याज दर और कुल माँग वक्र

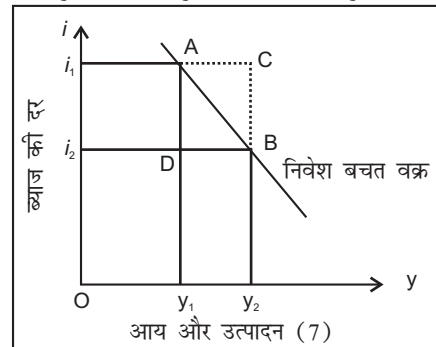
निवेश बचत वक्र (IS Curve) की व्युत्पत्ति

वस्तु क्षेत्र के संतुलन पर ब्याज दर और उत्पादन स्तर के संयोजन से आई-एस वक्र यानी निवेश बचत वक्र प्राप्त होता है। जब ब्याज की दर घटती है, तो उत्पादन का संतुलन स्तर बढ़ता है; जैसे कि चित्र में दिखाया गया है।



निवेश बचत वक्र

चित्र द्वारा आय और ब्याज दर के असंतुलन को इस प्रकार दर्शाया जा सकता है; जैसे कि चित्र में बिंदु A और B वस्तु बाजार के संतुलन और बिंदु C और D असंतुलन को दर्शाते हैं।



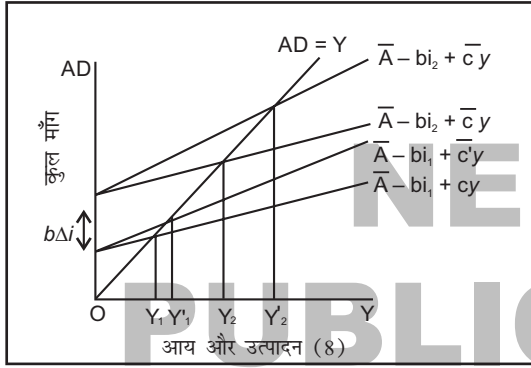
उपर्युक्त चित्र में बिंदु C पर ब्याज दर अधिक है और वस्तु की माँग कम है, जबकि बिंदु D पर वस्तु की माँग अधिक है जो कि असंतुलन है। बिंदु a पर ब्याज दर और आय का संयोजन है, जो कि संतुलन को दर्शाता है।

निवेश बचत वक्र का ढलान

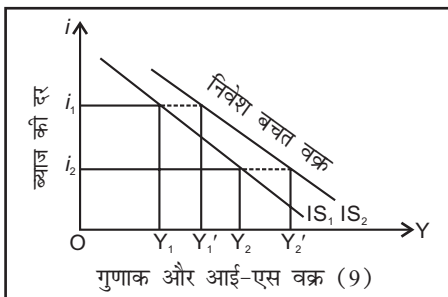
निवेश बचत वक्र का ढलान ब्याज दर में परिवर्तन के कारण आय में परिवर्तन है। निवेश बचत समीकरण के अनुसार

$$Y = a_G (\bar{A} - gi) \text{ में } (-b, a_G) \text{ ढलान है।}$$

ढलान नकारात्मक और सकारात्मक हो सकता है, क्योंकि ब्याज दर में गिरावट आने पर कुल मांग में ऊपर की ओर यानी संतुलन की ओर परिवर्तन होता है, जबकि इससे निवेश गुणक और संवेदनशील प्रभावित होती है। अन्य b उच्च y की ओर जाने से कम ढलान निवेश बचत वक्र बनता है और b कम होने पर तेज ढलान वाला निवेश बचत वक्र बनता है। बड़ा गुणक तीव्र कुल मांग का वक्र बनाता है। कम ढलान वाला कुल मांग वक्र उच्चतर a_G और तीव्र ढलान वाला कुल मांग वक्र निम्न a_G बनाता है, क्योंकि $a_G \frac{1}{1-C}$ है, इसलिए a_G पर C का सकारात्मक प्रभाव है, जैसे कि चित्र 8 में दर्शाया गया है।



उपर्युक्त चित्र में कुल मांग वक्र AD_1 को \bar{C} दर्शाया गया है, जहां $\bar{C}' > \bar{C}$, ब्याज पर i_1 से i_2 में बदलने पर $i_2 < i_1$ होता है, जो कुल मांग वक्रों में परिवर्तन समान रूप से आता है, जब कुल मांग वक्र कम ढलान वाला होता है तो आय का संतुलन y_1 से y_2 में बदलता है और कुल मांग वक्र के तीव्र ढलान में आय का संतुलन y_1' से y_2' में परिवर्तित होता है। इसी प्रकार निम्न चित्र में दर्शाया गया है कि निवेश बचत IS_2 वक्र कम ढलान वाला है, जो कि \bar{C}' के अनुरूप है। इसलिए उच्चतर \bar{C}' से गुणक a_G का मान ज्यादा होता है, जिससे संतुलन स्तर में वृद्धि होती है। जहां आई-एस वक्र का ढलान गुणक पर निर्भर होता है; जैसे—

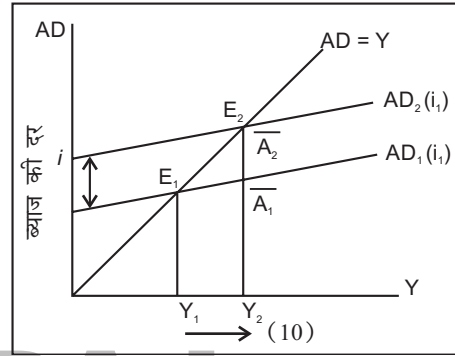


आई-एस वक्र की स्थिति

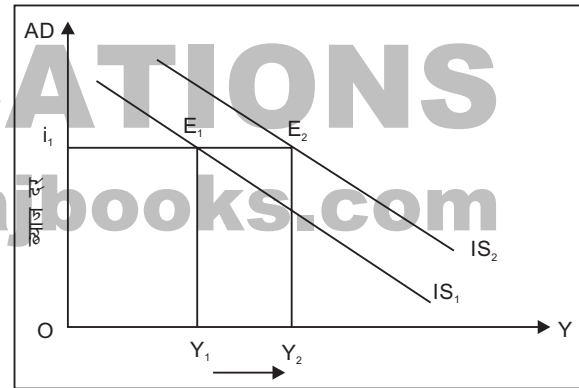
आई-एस वक्र की स्थिति को कई कारक निर्धारित करते हैं; जैसे चित्र में दर्शाया गया है।

$$y = a_G (\bar{A} - bi)$$

जहां b और a_G आई-एस वक्र की स्थिति में परिवर्तन करते हैं। यदि \bar{A} अपनी स्थिति बदल देता है तो कुल मांग वक्र में भी परिवर्तन आता है और ब्याज की दर i_1 पर \bar{A} के कारण आय उत्पादन का संतुलन y_1 से y_2 हो जाता है; जैसे—



यदि ब्याज दर समान रहती है तो इलास्टिसिटी E भी समान रहती है, जैसे कि चित्र में दर्शाया गया है।



क्योंकि इसमें उत्पादन के उच्च स्तर y_2 और ब्याज पर संतुलन का नया वस्तु बाजार संतुलन बनता है। आय में परिवर्तन Δy स्वायत्त उपयोग \bar{A} में परिवर्तन और गुणक a_G के गुणन फल के समान है।

$$\Delta y = a_G \cdot \Delta \bar{A} \text{ इसलिए इसमें कई घटक शामिल हैं; जैसे}$$

$$\bar{A} = \overline{CTR} + \bar{T} + \bar{G} + \bar{C}$$

इन घटकों में आई-एस वक्र में परिवर्तन आता रहता है।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. एक ऐसा निवेश वक्र बनाएं जहां निवेश स्वायत्त नहीं है। ऐसे निवेश वक्र का क्या अर्थ है?

उत्तर-केन्सीय मॉडल के अनुसार बचत और निवेश के समान होने पर संतुलन प्राप्त होता है। इसी संतुलन को निवेश वक्र द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। आमतौर पर निवेश को स्वायत्त माना जाता है, परंतु वास्तव में निवेश स्वायत्त नहीं होता है। अर्थव्यवस्था में निवेश के निर्धारक बिंदु के रूप में ब्याज दर शामिल की जाती है। इसमें ब्याज दर के अधिक होने पर निवेश में कमी आती है और ब्याज दर के कम होने पर निवेश में बढ़ोत्तरी होती है। इसलिए कोई भी कंपनी ब्याज दर कम होने पर निवेश अधिक करेगी और उधार लेगी, जबकि ब्याज दर बढ़ने पर उधार में कमी आएगी और निवेश में भी कमी आएगी यानी ब्याज दर और निवेश का एक-दूसरे से संबंध है। निवेश वक्र में निवेश स्वायत्त को इस प्रकार प्रदर्शित किया जा सकता है।

$$I = \bar{I} - bi$$

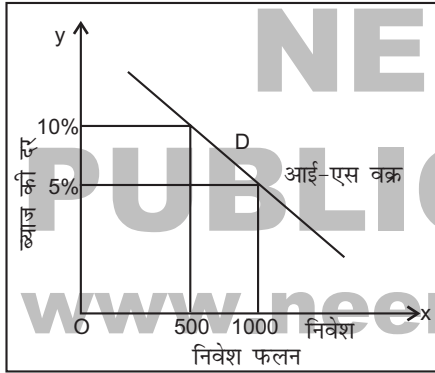
इसमें $b > 0$

i = ब्याज की दर है

b = ब्याज दर के लिए निवेश की प्रतिक्रिया है

\bar{I} = स्वायत्त निवेश व्यय

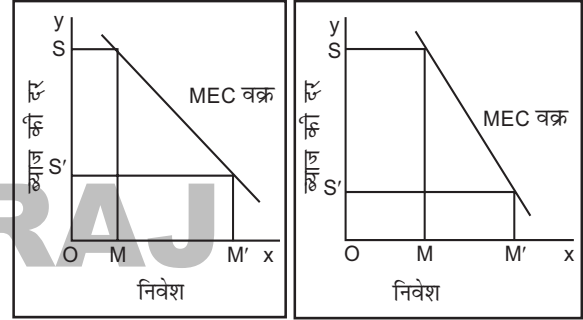
उपर्युक्त समीकरण के अनुसार कम ब्याज दर का अर्थ उच्च निवेश है, जैसे-



उपर्युक्त चित्र के अनुसार जब ब्याज की दर 10% होती है, तो निवेश 500 है, परंतु जब ब्याज की दर पर कर 5% हो जाती है तो निवेश 1000 हो जाता है यानी बढ़ जाता है। इसी प्रकार जब ब्याज की दर 5% से बढ़कर 10% हो जाती है तो निवेश 1000 से घटकर 500 रह जाता है। इस प्रकार के निवेश का ढलान सकारात्मक होता है, क्योंकि आमतौर पर यह निवेश निजी क्षेत्र द्वारा लाभ कमाने के उद्देश्य से किया जाता है। यह निवेश स्वायत्त नहीं होता। यह ब्याज दर के साथ-साथ परिवर्तित होता रहता है। इस प्रकार के निवेश वक्र का अर्थ है कि निवेश ब्याज की दर पर निर्भर करता है। निवेश कंपनियों द्वारा तब तक किया जाता है, जब तक निवेश का प्रतिफल लागत से अधिक नहीं हो जाता है, क्योंकि ऐसा निवेश ब्याज दर में बदलाव के साथ विपरीत रूप से बदलता है, इसलिए इसका ढलान भी सकारात्मक होता है। यह निवेश अर्थव्यवस्था में आय के स्तर से स्वतंत्र होने के बावजूद निरंतर बना हुआ है।

प्रश्न 2. ब्याज दर के प्रति निवेश की संवेदनशीलता बढ़ने पर निवेश किस तरह से प्रभावित होता है?

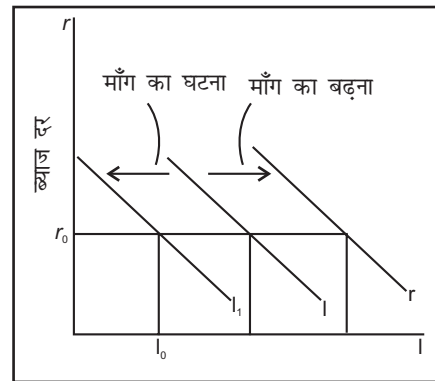
उत्तर-ब्याज दर के प्रति निवेश की संवेदनशीलता बढ़ने पर निवेश प्रभावित होता है; जैसा कि हमें ज्ञात है कि ब्याज दर में कमी आने पर निवेश बढ़ जाता है और ब्याज दर की बढ़ोत्तरी होने पर निवेश में कमी आती है। निवेश ब्याज दर के प्रति अधिक संवेदनशील या कम संवेदनशील हो सकता है। निवेश वक्र की स्थिति ढलान और निवेश के स्वायत्त स्तर पर निर्भर करती है। यदि निवेश संवेदनशील है तो ब्याज दर में छोटी-सी कमी भी निवेश में बड़े स्तर पर बढ़ोत्तरी कर सकती है तो इसी प्रकार ब्याज दर में बदलाव से निवेश की संवेदनशीलता कम होगी तो निवेश वक्र तीव्र होता है। ब्याज दर के प्रति निवेश की संवेदनशीलता के इस प्रभाव को निम्नलिखित चित्रों द्वारा उचित ढंग से समझा जा सकता है, जैसे-



उच्च संवेदनशील निवेश

निम्न संवेदनशील निवेश

उपर्युक्त चित्रों में ब्याज की दर की स्थिति स्वायत्त निवेश I द्वारा निर्धारित की गई है। स्वायत्त निवेश के स्तर में बदलाव होने पर निवेश की संवेदनशीलता उच्च या निम्न स्तर को दर्शाती है। इसे ब्याज की अलग-अलग दरों पर भी दर्शाया जा सकता है, जिसमें स्वायत्त निवेश व्यय स्तरों को प्रस्तुत करता है, जैसे-



प्रश्न 3. कुल मांग वक्र और आय के संतुलन स्तर पर ब्याज दर में बदलाव के प्रभाव की व्याख्या करें।

उत्तर-कुल मांग वक्र और आय के संतुलन स्तर पर ब्याज दर में बदलाव का प्रभाव पड़ता है। ब्याज दर के कारण निवेश प्रभावित होता है।